6 या नित चितवो उठ के भोर...

या नित चितवो उठ के भोर।।
मैं हूँ कौन, कहाँ ते आयो, कौन हमारी ठौर।।टेक।।
या नित चितवो उठ के भोर...

दीसत कौन कौन यह चितवत, कौन करत है शोर।
ईश्वर कौन, कौन है सेवक, कौन करै झकझोर।।१।।
या नित चितवो उठ के भोर...

उपजत कौन, मरै को भाई, कौन डरे (करे) लखि घोर।
गया नहीं आवत कछु नाहीं परिपूरन सब ओर ।।२।।
या नित चितवो उठ के भोर...

और, और मैं, और रूप ह्वै परिणति करि लई और।
स्वाँग धरै डोलौ याही तें तेरी 'बुधजन' भोर।।३।।
या नित चितवो उठ के भोर...

हे जीव! प्रतिदिन प्रात:काल उठकर इस प्रकार का चिंतन करो कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और मेरा जीवन का लक्ष्य क्या हैं?।।टेक।।

हे जीव! यह विचार करो कि मेरा आतमा किसको विषय बनाता हैं, यह चेतन कौन हैं, यह शब्द कहां से आ रहे हैं, यह ईश्वर कौन हैं और भक्त कौन हैं एवं कौन मुझे आश्चर्यचकित करता हैं? ।।१।।

हे जीव! प्रतिदिन विचार करो कि कौन जन्म लेता हैं कौन मरण को प्राप्त करता हैं, और कौन दृश्य देखकर डरता हैं? मेरे स्वरुप में न तो कुछ घटता और न ही कुछ बढता हैं मैं तो स्वयं हर दृष्टि से परिपूर्ण हूँ।।२।।

बुधजन कवि कहते हैं कि हे जीव! प्रतिदिन विचारो कि यह शरीर, रुप और इसका परिणमन मेरा स्वरुप नहीं हैं और शरीर तो वेश मात्र हैं, इस तरह का ज्ञान प्रगट होना ही जीवन का सुप्रभात हैं।।३।।